(2)

पंजाब पर आक्रमण :-

चन्द्रगुप्त मौर्य एक वीर एवं साहसी योद्धा था उसने अपने प्रथम असफल मगध अभियान से सबक सीखा और अब उसने अपनी सेना का पुनर्गठन किया तथा सीमान्त क्षेत्रों के राज्यों की ओर बढ़ा। इस समय तक सिकन्दर की मृत्यु हो चुकी थी और पंजाब में विद्रोह आरम्भ हो गया था। चन्द्रगुप्त मौर्य ने अवसर का लाभ उठाया और उसने पंजाब में अपनी पूरी शक्ति के साथ यूनानियों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। इस युद्ध में चन्द्रगुप्त मौर्य विजयी हुआ।

मगध पर पुनः आक्रमण :-

पंजाब में अप्रत्याशित सफलता प्राप्त करने से चन्द्रगुप्त मौर्य की सैन्य शक्ति अत्यधिक सुदृढ़ और आत्मविश्वासी हो गई अतः चन्द्रगुप्त मौर्य ने एक बार फिर पूरी शक्ति के साथ मगध पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण में मगध सम्राट धनानन्द मारा गया सेना के साथ उसका सभी परिवार के लोग भी मारा गया। जिससे नन्दवंश का राज्य समाप्त हो गया।

नन्दवंश को समाप्त कर चन्द्रगुप्त चाणक्य की सहायता से मगध की सिंहासन पर आरूढ़ हुआ चाणक्य उसका मंत्री बना। इस सफलता से चन्द्रगुप्त मौर्य सम्पूर्ण उत्तरी भारत का स्वामी हो गया।